

अंकल ने लौंडा बना दिया

“सम्पादक एवम् प्रेषक : वरिन्द्र सिंह दोस्तो आज आपको अपने एक पाठक की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। मेरे इस पाठक का नाम आकाश है। करीब छह महीने पहले मेरी... [\[Continue Reading\]](#) ...”

Story By: आकाश सामन्त (akashsamaant)

Posted: Monday, November 2nd, 2015

Categories: [गे सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [अंकल ने लौंडा बना दिया](#)

अंकल ने लौंडा बना दिया

सम्पादक एवम् प्रेषक : वरिन्द्र सिंह

दोस्तो आज आपको अपने एक पाठक की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। मेरे इस पाठक का नाम आकाश है।

करीब छह महीने पहले मेरी एक कहानी पढ़ने के बाद उससे फेसबुक पे चैटिंग के जरिये बात हुई।

आकाश पहले एक लड़की के नाम से फेसबुक अकाउंट चला रहा था और मैं भी यही समझ रहा था कि वो एक लड़की है, मगर बाद में मुझे पता चला कि यह कोई लड़की नहीं है बल्कि एक लड़का है, जिस उसके किसी अंकल ने चोद चोद कर लौंडा बना दिया।

बातचीत में धीरे धीरे खुलते खुलते उसने बताया कि वो दरअसल एक गे है और बॉटम है। अब गे अगर बॉटम हो तो मतलब नीचे लेट कर अपनी गांड मरवाता है, और गे अगर टॉप हो तो वो दूसरे की गांड मारता है।

कुछ ऐसे भी होते हैं, जो टॉप और बॉटम दोनों होते हैं। एक और होते हैं जिन्हें क्रॉस ड्रेस्सी कहते हैं। ये वो लौंडे होते हैं, जो लड़कियों की तरह कपड़े पहन कर, मेकअप करके गांड मरवाते हैं। बहुत से तो ऐसे होते हैं, जिन्होंने अपने बूब्स भी बढ़ा रखे होते हैं हारमोन इन्जेक्शन लेकर और लेडीज़ ब्रा पेंटी तक पहनते हैं।

मुझे भी ये सारी जानकारी अपने उस दोस्त से ही मिली जो मैंने आपके साथ बांटी है। खैर अब उसकी कहानी पर आते हैं।

दोस्तो, मेरा नाम आकाश है और अब मैं 24 साल का नौजवान हूँ। बात करीब 4-5 साल पहले की है, तब मैं पढ़ता था।

माँ बाप का मैं अकेला बच्चा हूँ, बहुत ही लाडला हूँ, शुरू से ही मेरी हर मांग पूरी हुई है।

जब मैंने दसवीं क्लास पास की तो अपने लिए अलग कमरे की डिमांड कर दी।

घर कुल तीन ही तो कमरे थे, मगर माँ ने एक कमरा मेरे लिए सेट कर दिया। मैं अपने कमरे में बादशाह की तरह महसूस करता।

ज़िंदगी बहुत अच्छी गुज़र रही थी। कोई गर्ल फ्रेंड तो नहीं थी, मगर बहुत इच्छा थी कि एक होती तो मैं भी उसके साथ मज़े करता। मगर ऊपर वाले को तो कुछ और ही मंज़ूर था।

एक दिन हमारे घर पापा के एक दोस्त आए, जो अपने किसी काम की वजह से हमारे घर एक हफ्ते के करीब रुकने वाले थे।

अब मेहमान आए तो मुझे एडजस्ट करने के लिए कहा गया कि अंकल मेरे कमरे में मेरे ही बेड पे मेरे साथ सो जाएँगे।

मुझे बुरा तो लगा पर माँ बाप का कहा मानना पड़ा।

रात को अंकल ने डैडी के साथ पेग भी लगाया, मुझसे भी बहुत प्यार जताया।

रात को खाना वाना खाकर वो मेरे कमरे में आ गए।

तब हमारे घर में ए सी नहीं था सो कूलर ही था और गर्मी के मारे बुरा हाल था।

अंकल बोले- बहुत गर्मी है यार तुम्हारे यहाँ तो, मैं तो नहा कर सोऊँगा।

वो नहाने चले गए।

नहा कर जब आए तो सिर्फ चड्डी पहने थे, पूरा बदन बालों से भरा हुआ। छोटी सी चड्डी में उनके लंड का पूरा आकार दिख रहा था। पहले तो वो कूलर के आगे खड़े हो गए, फिर मेरे साथ आकर बेड पे लेट गए।

मैं भी लेटा रहा।

थोड़ी ही देर में वो सो गए, मैं भी सो गया।

करीब दो ढाई बजे मेरी आँख खुली, मुझे पेशाब आ रहा था, नाईट लैम्प की रोशनी में मैं उठ कर पेशाब करने गया।

जब पेशाब कर के आया तो देखा के अंकल तो गहरी नींद में सो रहे हैं, मगर उनका लंड उठा हुआ था और उनकी चड्डी का तम्बू बना रखा था।

मेरे मन में विचार आया, आज तक किसी लड़की के साथ तो मौका नहीं मिला, क्यों न अंकल के लंड के साथ खेल के देखूँ।

मैं बड़े आराम से बेड पे आया और अंकल के पास बैठ गया।

पहले मैंने चड्डी के ऊपर से उनका लंड पकड़ कर देखा, पत्थर की तरह सख्त... मगर इससे भी मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई तो मैंने बड़े धीरे धीरे से उनकी चड्डी हटा दी और उनका लंड बाहर निकाल लिया।

करीब 6 इंच का उनका लंड काफी तगड़ा लगा मुझे।

मैंने धीरे धीरे से उस से खेलना शुरू किया, उसकी चमड़ी पीछे हटा कर, गुलाबी रंग का टोपा बाहर निकाला। मगर जैसे जैसे मैं उनके लंड के साथ खेल रहा था, मेरी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी।

मेरा अपना लंड भी पूरी टाईट हो रहा था, मैं अपने लंड को भी सहला रहा था और अंकल के लंड को भी सहलाए जा रहा था।

उनके लंड की चमड़ी आगे पीछे करके उनकी मुट्ठ मार रहा था और इसी दौरान मैंने खुद ही उनके लंड को अपनी तरफ मोड़ा और उनके लंड को अपने मुँह में ले लिया।

अजीब स्वाद था मगर मुझे बुरा नहीं लगा और मैं अंकल का लंड चूसने लगा।

शायद एक मिनट ही चूसा होगा कि अंकल ने अपने हाथ से मेरा सर दबाया और आधे से ज्यादा लंड मेरे मुँह में ठूस दिया।

‘थोड़ा थोड़ा नहीं, पूरा मुँह में लेकर चूसते हैं।’ और अंकल मेरे सर को नीचे दबा दबा कर

अपना लंड मुझसे चुसवाने लगे।

अब तो कोई और बात बची ही नहीं थी। लंड चुसवाते चुसवाते उन्होंने अपनी चड्डी भी उतार के फेंक दी और मेरा लोअर भी उतरवा दिया और मेरे लंड को हाथ में पकड़ के खेलने लगे।

‘कभी ली है किसी की?’ अंकल ने पूछा।

मैंने ना में सर हिलाया।

‘कभी गान्ड मरवाई है?’ उन्होंने फिर पूछा।

मैंने फिर न में सर हिलाया।

उन्होंने अपना लंड मेरे मुँह से निकलवा दिया और मुझे बेड पे लिटाया और मेरी टी शर्ट भी उतरवा दी, मुझे बिल्कुल नंगा करके वो मेरे ऊपर ही लेट गए, मुझे बाहों में भर के पहले उन्होंने मेरे कंधे, गाल, गर्दन पर चूमा, अपनी जीभ से चाटा, फिर मेरे दोनों स्तनों को अपने मुँह में लेकर चूसा।

चाहे मेरी छाती बिल्कुल सपाट थी, मगर छाती चुसवाने में मज़ा आया मुझे।

‘मज़ा आया?’ अंकल ने पूछा।

‘जी!’ मैंने कहा।

‘जब औरत बच्चे को अपना दूध पिलाती है या मर्द औरत की छाती चूसता है न, तब औरत को भी ऐसे ही मज़ा आता है।’ वो बोले। थोड़ी देर और मेरी छातियाँ चूसने के बाद वो नीचे मेरे पेट के इर्द गिर्द, बगलों को, कमर को चूसते हुये मेरे लंड पर जा पहुँचे और मेरे सारे लंड को ही अपने मुँह में ले लिया।

बड़े प्यार से अंकल ने मेरे लंड को, मेरे आँड को चूसा।

मैंने तो पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था।

फिर मुझे उल्टा लिटा दिया, मेरे चूतड़ों को खूब चूमा और मेरे दोनों चूतड़ खोल कर मेरी

गान्ड का छेद अपनी जीभ से चाट गए, मेरी गाँड पे जीभ फेरते फेरते उन्होने बहुत सारा थूक लगाया और अपनी उंगली मेरी गान्ड में डाल कर आगे पीछे करने लगे !
यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

था तो यह काम थोड़ा मुश्किल, मगर मुझे इसमे भी आनन्द सा आ रहा था, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं कोई लड़की हूँ और ये मेरे पापा हैं, या मेरा कोई बाँय फ्रेंड जो मुझे चोदने जा रहा है।

मैंने भी पूरा मन बना लिया कि अगर अंकल ने मुझे चोदा तो मैं भी उनके पूरा साथ दूँगा।

ढेर सारे थूक के बाद अंकल ने अपना लंड मेरी कुँवारी गान्ड पे रखा और अंदर डालना चाहा, मगर वो अंदर नहीं घुसा।

मैं भी अपनी गान्ड को भींच लेता था तो अंदर जाना बहुत मुश्किल हो रहा था।

अंकल ने मुझे तेल लाने को कहा।

मैं उठा और ड्रेसिंग टेबल से पॉन्डस की क्रीम उठा लाया।

अंकल ने मुझे घुटने मोड़ कर बेड पे बिठाया और फिर पूरा आगे को झुका दिया, मेरी ठोड़ी मेरे घुटनों को लग रही थी।

मैं पूरा फ़ोल्ड हुआ पड़ा था।

अंकल ने काफी सारी क्रीम मेरी गान्ड पर लगा कर उंगली से अंदर बाहर किया और अपने लंड को भी क्रीम से अच्छी तरह से चुपड़ लिया।

जब गान्ड और लंड दोनों पूरे चिकने हो गए तो अंकल ने फिर से अपना लंड मेरी गाँड के छेद पे रखा और इस बार हल्के से धक्के से ही उनके लंड का टोपा मेरी गान्ड में घुस गया। दर्द के मारे मेरी बुरी हालत हो गई।

मगर अंकल ने मेरे को और मजबूती से पकड़ लिया, शायद उन्हें यह एहसास हो गया होगा

कि कहीं मैं उनके नीचे से निकल न जाऊँ। थोड़ा सा पीछे करके अंकल ने फिर ज़ोर लगाया और थोड़ा और लंड मेरी गान्ड में घुसेड़ दिया। मेरी तो आँखों में आँसू आ गए। गांड फटने का दर्द भी कम नहीं होता चाहे आवाज़ नहीं आती, मगर बहुत ही दर्दनाक काम है।

मैंने अंकल से विनती की- अंकल रहने दो, बहुत दर्द हो रहा है, निकाल लो प्लीज़ ! मगर अंकल बोले- दर्द तो होगा ही, पहली बार है न, एक बार सारा अंदर ले ले, उसके बाद निकाल लूँगा। आज आज दर्द है, कल तो देखना आराम से जाएगा। मेरी किसी भी विनती को उन्होंने नहीं सुना, बस प्यार से सहलाते, पुचकारते हुये उन्होने ने अपना लंड मेरी गान्ड में टेलना जारी रखा और जब तक उनका पूरा लंड मेरी गांड के अंदर तक नहीं समा गया, वो नहीं रुके।

जब पूरा लंड अंदर घुस गया तब उन्होंने थोड़ा सा आराम किया मगर अपना लंड मेरी गान्ड से बाहर नहीं निकाला। मेरी तो ऐसे हालत थी कि मेरा खाया पिया सारा उल्टी हो जाएगा, आँखों में आँसू, चेहरा लाल सुर्ख।

अंकल ने मेरा आसन सीधा किया मतलब मुझे हाथ पाँव खोल कर बेड पर चित्त लिटा दिया, मगर अपना लंड बाहर नहीं निकाला। जब मैं खुल कर लेटा तो थोड़ा सांस आया मुझे मगर अब अंकल ने ऊपर से मेरी चुदाई शुरू कर दी, वो अपना लंड मेरी गान्ड में अंदर बाहर करने लगे।

मेरा चेहरा घूमा कर मेरे गाल और होंठ चूमने लगे, अपनी जीभ से मेरा चेहरा चाट गए।

बेशक इस काम में मुझे मज़ा आ रहा था मगर गांड फटी का दर्द भी असहनीय था। अंकल आराम आराम से मुझे चोद रहे थे और बोले- बुरा मत मानना बेटा, दरअसल इच्छा तो मेरी यह थी कि तेरी जगह तेरी माँ मेरे नीचे लेटी होती, मैं उसको चोद रहा होता, मगर

चलो कोई बात नहीं ! वो नहीं तो उसके बेटा ही सही, मेरे लंड को तो चोदने के लिए सुराख मिल गया ।

मुझे बड़ा गुस्सा आया कि साला मेरी गान्ड मार रहा है और मेरी ही माँ पर भी बुरी नज़र रख रहा है, मेरी ही माँ की चूत चुदाई की बात कर रहा है ।

मैंने भी उससे कह दिया- देखो अंकल, अब आप जो कर रहे हो, चुपचाप कर लो, मगर माँ के बारे में मैं कोई बकवास नहीं सुन सकता । अंकल को लगा कि कहीं मामला बिगड़ न जाए, बड़े प्यार से मुझे पलोसते हुए बोले- अरे बेटा, तुम तो नाराज़ हो गए, मैंने तो यूँ ही बात कर दी, चल छोड़ उसे, हम अपने मज़े लेते हैं ।

कह कर अंकल अपनी चुदाई की स्पीड बढ़ा दी, थोड़ी सी क्रीम और लगाई ताकि लंड आराम से जाए ।

करीब 7-8 मिनट की चुदाई के बाद उन्होंने अपना वीर्य मेरी गांड के अंदर ही छुड़वा दिया । चोदने के कुछ देर बाद तक वो मेरे ऊपर ही लेटे रहे, उसके बाद मेरी बगल में ही लेट गए और दो मिनट बाद ही खरॉटे मारने लगे ।

मैं उठ कर बाथरूम में गया, गांड पे हाथ लगा कर देखा, खून तो नहीं निकला मगर दर्द बहुत था ।

खैर चूतड़ और गाण्ड धो-धू कर मैं सो गया ।

सुबह लेट उठा ।

अंकल पहले ही पापा के साथ जा चुके थे, माँ ने आकर जगाया ।

मगर जब मैंने बिस्तर से उठना चाहा, मेरी तो जैसे जान ही निकल गई, बहुत दर्द हुआ गान्ड में ।

बड़ी मुश्किल से उठ कर बाथरूम गया, पेशाब तो कर लिया मगर पोट्टी नहीं आई, सारा दिन अपने कमरे में ही रहा मैं ।

शाम को अंकल आए, जब मुझे से मिले तो मैंने उन्हें सारी बात बताई। उन्होंने मुझे एक गोली दी और लगाने को क्रीम दी। उससे मुझे आराम आया।

रात को अंकल फिर मेरे साथ सोये।

मेरा दर्द भी अब ठीक था, शायद दवाई का असर था, रात को अंकल ने अपनी मीठी मीठी बातों से मुझे फिर फुसला लिया और उस रात फिर मुझे चोदा।

आज तो करीब आधा घंटा मेरी गांड मारी।

आने वाले दिनों में उन्होंने मुझे लंड भी चुसवाया। पहले मेरा लंड थोड़ी देर चूसते, फिर बहुत देर अपना लंड चुसवाते।

दो तीन दिन बाद मुझे खुद इच्छा होने लगी के मैं अंकल का लंड चूस लूँ। तीन दिन तक मुझे पोट्टी नहीं आई, जब आई तो उसने अलग मेरी गांड फाड़ दी, बहुत तकलीफ हुई।

मगर अब तो गांड में तकलीफ मुझे अच्छी लगने लगी। चौथे दिन तो मैं खुद ही रात में अंकल के सामने उकड़ूँ होकर बैठ गया।

जो क्रीम मेरे महीना चलती थी, चार पाँच दिनों में ही आधी से ज्यादा खत्म हो गई क्योंकि अंकल अपने लंड और मेरी गान्ड पर ढेर सारी क्रीम लगा कर ही मुझे चोदते थे।

अंकल एक हफ्ता हमारे घर रहे और पूरा एक हफ्ता उन्होंने मेरी गान्ड मारी। मैं बहुत खुश था। अब पोट्टी की कोई प्रोब्लम नहीं थी, सब ठीक ठाक था।

मैं अपनी मुट्ठ मार लेता या अंकल मार देते, मगर अब वो मेरा लंड नहीं चूसते थे, सिर्फ मुझे अपना लंड, अपने आँड चुसवाते और मेरी गांड मारते।

जिस दिन उन्होंने जाना था, उस रात तो उन्होंने दो बार मेरी गान्ड मारी।

फिर अंकल चले गए, मुझे बहुत दुख हुआ।

एक दो दिन तो ठीक ठाक निकाल लिए मगर रात को मेरी तो गान्ड में खुजली होने लगी, मैं चाहता था कि कोई आए और मेरी गान्ड मारे, मुझे अपना लंड चुसवाए, मुझे अपना

माल पिलाये ।

अगले दिन से मैंने तलाश शुरू की किसी ऐसे मर्द की जो मेरी गांड की आग बुझा सके । हमारे आस पड़ोस की, मेरे कॉलेज की कुछ लड़कियाँ जो मुझे लाइन देती थी, अब मुझे उनमें कोई इंटरेस्ट नहीं था, मुझे चूत नहीं लंड चाहिए था ।

मेरी तलाश रंग लाई और मुझे एक दोस्त ऐसा मिला, जिसने मुझे बहुत प्यार दिया, वो मेरी गांड मारता, जब झड़ने वाला होता तो अपना लंड मेरी गान्ड से निकाल कर मेरे मुँह में देता और अपने वीर्य की पिचकारियाँ मेरे मुँह में छुड़वाता, मेरे तन और मन दोनों की प्यास बुझ गई ।

उसके बाद तो चल सो चल... आज तक मैं करीब 5-6 अलग अलग लोगों से गान्ड मरवा चुका हूँ । मगर मैं जिससे भी रिश्ता रखता हूँ, लंबा रिश्ता रखता हूँ । मैं तो चाहता हूँ, के मैं अपनी शादी भी किसी लड़के से ही करूँ ।

मैंने आज तक किसी लड़की को छू कर भी नहीं देखा, मुझे लड़कियाँ पसंद नहीं, लड़के पसंद हैं ।

मेरी ई मेल आई डी है akashsamaant@gmail.com

अगर आप एक मर्द हैं और मुझसे शादी करना चाहते हो तो मुझे मेल करो, बाकी दूर ही रहो, क्योंकि मैं कोई रंडी नहीं कि ठोका और चल दिये, प्यार चाहिए, दे सकते हो तो ही बात करना !

alberto62lopez@yahoo.in

